अध्याय–पंचम

शोध सार, निष्कर्ष एवं सुझाव

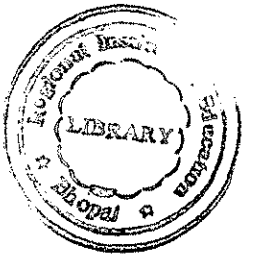

अध्याय–पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की उन्नती, समृद्धि व लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती इस देश के शिक्षित, सभ्य व चरित्रवान नागरिकों पर निर्भर करती है। इस प्रकार के नागरिकों को तैयार करने व नव पीढ़ी निर्माण के लिए काबिल शिक्षकों की भूमिका को ध्यान में रखते हुए ही इस देश में पुरातन काल से ही शिक्षकों को उच्च गरीमामय व स्थान प्राप्त है। शिक्षकों के जीवन व आदर्शो से समाज सदा से प्रेरणा व दिशा ज्ञान लेता रहा है। इसलिए शिक्षक को समाज का दर्पण माना है।

समस्त शैक्षिक कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं के मुख्य लक्ष्यों में यह तय किया गया है कि सभी प्रयासों में शिक्षक का सम्मान बना रहे, "उसकी भूमिका को कमतर नहीं आंका समाज में उसको समान की दृष्टि से देखा जाएँ" और उसे एक खास दर्जा प्राप्त हो।

एक तरफ जहां उपर्युक्त तरह से "प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनिकीकरण" कि दिशा में कोशिश जारी है वही दूसरी और शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती राजनैतिक दखलंदाजी बेअसर होता शिक्षा प्रबंधन समाज। समुदाय की शिक्षा के प्रति बढ़ती जागरूकता व बदलता नजरिया, बेअसर सूचना प्रबंध तंत्र का अभाव, शिक्षकों की गैर शैक्षिक कार्यो में प्रतिनियुक्ति, मूलभूत सुविधाओं की बेहद कमी, हाथों से फिसलता बच्चों का उपलब्धी स्तर व ज्ञान एवं सूचनाओं विस्फोट आदि कुछ ऐसी वजह है जिससे की आम आदमी की सोच शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था के प्रति नकारात्मक बनती जा रही है। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा शिक्षक को भुगतना पड़ रहा है तथा शिक्षक व समुदाय के संबंधो पर इसका प्रतिकुल असर होता नजर आ रहा है। समुदाय के अति निकट होने के कारण ही शिक्षक को सबसे ज्यादा आक्रोश का

सामना करना पड़ता है। जिससे उनकी छबि उनका समान, उनका व्यक्तित्व व उसकी विश्वसनियता में लगातार कमी होती जा रही है।

5.2 प्रस्तुत अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन "प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के प्रशासनिक कार्यो के कारण उनके अध्यापन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन है।"

5.3 संक्षेपिका

संपूर्ण लघुशोध प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में शोध परिचय, द्वितीय अध्याय में शोध सम्बन्धित अध्ययन, तृतीय अध्यांय में शोध समस्या, प्रविधि एवं प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का सारणीयण एवं विश्लेषण तथा पँचम अध्याय में शोधसार निष्कर्ष एवं सुझाव तथा अन्त ने सन्दर्भ ग्रन्थ एवं परिशिष्ट में उपयोग लिये गये उपकरणों को लिया गया है।

5.4 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे :-

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रशासनिक कार्यो का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षका-शिक्षिकाओं को प्रशासनिक कार्यो के कारण उनके अध्यापन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण-शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को प्रशासनिक कार्यो के कारण उनके अध्यापन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

5.5 परिकल्पना

1. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक और शिक्षिकाओं का प्रशासनिक कार्यो के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है।

2. ग्रामीण और शहरी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का प्रशासनिक कार्यो के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक है।

3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के प्रशासनिक कार्यो का उनके अध्यापन पर प्रभाव पड़ता है।

4. ग्रामीण और शहरी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के प्रशासनिक कार्यो का उनके अध्यापन पर प्रभाव पड़ता है।

5.6 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निम्नांकित निष्कर्ष सामने आ रहे है।

1. शिक्षकों को शिक्षिकाओं की तुलना में जनगणना, पल्स-पोलियो, मंतदाता सूची, परिवार नियोजन की जानकारी, चुनावी कार्य आदि कार्य ज्यादातर करने पड़ते हैं।

2. शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों को मध्यान्ह भोजन, जनगणना, पल्स-पोलियो, प्रौढ़ शिक्षा तथा साक्षरता, पशु गणना, परिवार नियोजन की जानकारी, आकस्मिक उत्पन्न बीमारियाँ तथा प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी देने का कार्य ज्यादातर करना पड़ता है।

3. शिक्षक-शिक्षिकाओं की तुलना में, शिक्षिकाओं ने अपने ज्यादातर मंत दिए हैं कि बी.पी.एल. सर्वेक्षण, जनगणना कार्य, बढ़ते पर्यवेक्षण, वित्त एवं लेखा कार्य, वाचन लेखन कार्यक्रम, अन्य शिक्षकों के प्रशासनिक कार्यो की जबावदारी का कार्य अधिक करना पड़ता है। इस कारण अध्यापन प्रभावित होता है।

4. शहरी–ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों ने अपना मत दिया है कि परिवार नियोजन की जानकारी, साक्षरता तथा प्रौढ़ शिक्षा, मतदाता सूची, चुनावी कार्य, मध्यान्ह भोजन, अन्य शिक्षकों के प्रशासनिक कार्यों की जिम्मेदारी, जनगणना कार्य, बढ़ते पर्यवेक्षण, वित्त एवं लेखा कार्य, वाचन लेखन कार्यक्रम के कारण अध्यापन कार्य प्रभावित होता है।

5. शिक्षकों के बार–बार गैर शैक्षिक कार्यों से समुदाय में जाने से आम आदमी की नजर में उसके समान, गरिमा, व्यक्तित्व व विश्वसनीयता में कमी आ रही है।

6. शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से विमुख हो रहा है इसके कारण उनके अध्यापन कार्य पर प्रशासनिक कार्यों का विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

7. शिक्षा में गुणात्मकता तथा बच्चों की उपलब्धि स्तर में स्पष्टता कमी हो रही है।

8. शिक्षकों की ऊर्जा व क्षमताओं का सही इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है।

9. यह कार्य करने से शिक्षकों की शारीरिक तथा मानसिक स्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

10. शिक्षकों के अपने अध्यापन कार्यों में अंतराल (गैप) आने से समुदाय में उसे उपेक्षा व आक्रोश मिल रहा है।

11 उसे अन्य विभागों एवं प्रशासनिक अधिकारियों का भी असंयमित व्यवहार झेलना पड़ रहा है, जिससे शिक्षक व शिक्षा विभाग अपने को अंतिम पायदान पर खड़ा पा रहा है।

12. शिक्षक का मुख्य कार्य अध्यापन करना है अगर इस तरह शिक्षकों की गैर–शिक्षक कार्यों में प्रतिनियुक्ति होती रही तो उनका विपरीत असर उनके अध्यापन कार्य पर होगा जो कि प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा की बुनियाद है अगर बच्चों की बुनियाद की कच्ची रही तो उनकी उच्च

शिक्षा की इमारत कच्ची रह जावेगी और इसका असर उनके गुणात्मक उपलब्धि पर होता है जो कि आगे चलके उनका भविष्य बिगड़ सकता है।

13. शिक्षकों को अगर प्रशासनिक कार्यो का बोझ बढ़ता गया तो भविष्यकाल में कोई भी व्यक्ति शिक्षक बनना पसंद नहीं करेगा और आगे चलके बिना शिक्षक के स्कूल खाली पड़ सकते है।

14. देखा गया है कि पूर्व माध्यमिक शिक्षक अध्यापन कार्य में कम और अन्य कार्यो में अधिक व्यस्त रखे जाते है। उनसे चुनाव जनगणना, पशु गणना, पल्स पोलियो अभियान, मतगणना, सिंचित एवं असिंचित भूमि का आकलन कराया जाता है इन सारे कार्यो को करते हुए शिक्षक टूट सा जाता है। ऐसे शिक्षक का उपयोग भारत में ज्ञानदाता के रूप में नही बल्कि बाबुओं के रूप में होता है। कितना घिनौना मजाक है यह प्राथमिक शिक्षक के साथ ?

15. शिक्षण कार्य के अतिरिक्त शिक्षकों को शिक्षणेत्तर कार्य भी करने पड़ते है, जिसका प्रभाव उनके व्यवसाय एवं जीवन संतुष्टि पर पड़ता है।

16. प्रशासनिक निर्णयों में शिक्षकों की भागीदारी नहीं होती है।

17. छोटे-छोटे कार्य के लिए प्रशासन से अनुमति प्राप्त करने में समय नष्ट होता है।

18. प्रशासनिक नीतियों में होने वाले बार-बार परिवर्तनों से शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

19. प्रशासनिक नीतियों का निर्धारण विद्यालय प्रशासन द्वारा नहीं होता है।

20. शिक्षक व्यक्तिगत तथा कक्षागत वास्तविक समस्याओं को प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत करने से डरते है।

21. प्रधानाध्यापक द्वारा व्यावसायिक व्यावसायिक पथ प्रदर्शक के रूप में सलाह प्रदान नहीं की जाती है।

5.7 सुझाव

आज के माहौल में जब किसी कार्य का संतोषजनक स्तर पर निष्पादन करने हेतु जिस समक्ष कौशल्य व निपुणता को आवश्यकता होती है। वहीं अगर हम अपने शिक्षकों में देखना चाहते है तो सर्वप्रथम हमें शिक्षकों को शैक्षिक कार्यो में ही संलग्न रखना होगा।

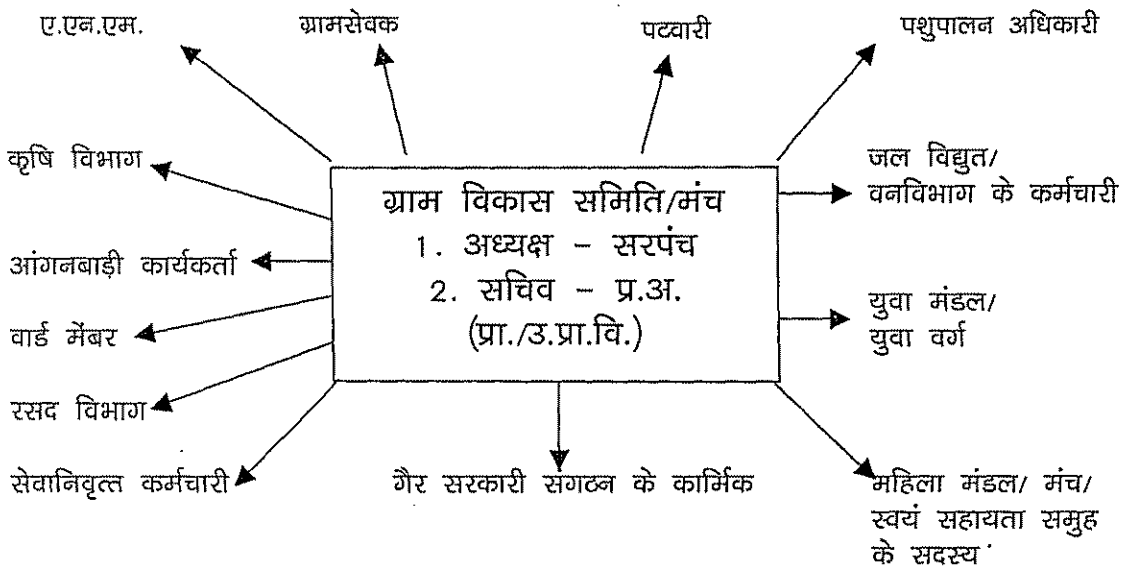

1. शिक्षक की प्रशासनिक कार्यो में प्रतिनियुक्ति को सरकार द्वारा तत्काल रोका जाए।

2. यदि कोई प्रशासनिक अधिकारी किसी शिक्षक की प्रतिनियुक्ति करता है तो उसके खिलाफ कार्यवाही अमल में लायी जाए।

3. किसी भी परिस्थिति में विद्यालयों को बंद नहीं रखा जाए। जैसे किसी भी विद्यालय के समस्त स्टाफ को मतदाता सूची संशोधन पल्स पोलियो अभियान किसी सर्वे आदि में ड्यूटी लगाने से विद्यालय बंद रहता है।

4. शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित दिवसों को कम नहीं किया जाए।

5. शिक्षकों को मर्यादानुकुल कार्य सौंपे जाने चाहिए।

6. शिक्षा विभाग द्वारा भी अपने सूचना प्रबंध तंत्र को मजबूत व सुव्यवस्थित बनाना चाहिए जिससे शिक्षकों को बार-बार ग्राम समुदाय शिक्षक कार्यालयों के बीच चक्कर न काटने पड़े।

7. ग्राम स्तर पर एक ग्राम विकास समिति/मंच बनाया जाना चाहिए तथा सरकारों द्वारा उनको अधिकार व कार्यो के निर्धारण व क्रियान्यवन का जिम्मा सौंपा जाना चाहिए जैसे-

ग्राम विकास समिति मुख्य रूप से जिम्मेदारी उस कर्मियों को सौंपे जिस विभाग से संबंधित कार्य है तथा सहयोग हेतु शेष विभाग के कर्मियों को यथानुरूप कार्य विभाजन कर दें।

8. सरकार शिक्षकों को अध्यापन कार्य के अलावा कोई अन्य कार्य न सौपें।

9. प्रशासनिक निर्णयों में शिक्षकों की भागीदारी होनी चाहिए।

10. प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षकों की अन्यत्र ड्यूटी न लगायी जाय। गैर-शैक्षिक कार्यो का बोझ कम किया जाय।

5.8 भविष्य के लिए शोध सुझाव

1. भविष्य के शोध हेतु प्रस्तावित लघुशोध प्रबंध की दिशा में ही आगे अध्ययन किया जा सकता है।

2. कार्यो से उत्पन्न तनाव के कारण होने वाली समस्याओं के विषय में अध्ययन किया जा सकता है।

3. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया जा सकता है।

4. वर्तमान भारत के संदर्भ में शिक्षकों की स्थिति का अध्ययंन किया जा सकता है।

5. शिक्षकों की गैर शैक्षिक कार्यो में प्रतिनियुक्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

6. प्राथमिक शाला में कार्य शिक्षकों को गैर शैक्षिक कार्यो के कारण उत्पन्न तनाव का अध्ययन करना।